यहोशू ने परमेश्वर के लोगों के लिये अनुशासन का नमूना रखा

जो बच्चों को सिखाते हैं उन्हें अध्ययन सी 6 बी पढ़ना चाहिये

प्रार्थना: "प्रिय परमेश्वर हमें ठीक करने में और वे जो हमारे विरोध में हैं उन्हें पुन: स्थापित करने में सहायता कर जिस प्रकार यीशु ने कहा"।

1. गलती करने वाले विश्वासियों को पुन: स्थापना करने के लिये प्रार्थना की तैयारी करें:

यहोशू 1:6-11 में खोजें कि अनुशासन बनाये रखने के लिये परमेश्वर ने यहोशू से क्या कहा।

अपने लोगों को मिस्त्र की दासत्व से निकलने के बाद परमेश्वर ने उन्हें बियाबान में, जंगल में चालीस वर्षों तक भटकने दिया क्योंकि उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया। उनका अगुवा मूसा के मरने के पहले उसने यहोशू को तैयार किया कि जो देश परमेश्वर ने अब्राहम की सन्तान को देने की प्रतिज्ञा की है उसे वह जीत ले। यहोशू ने इस सेना के कार्यों में अनुशासन को बनाये रखा। उदाहरण को यहोशू अध्याय 5-8 में पढ़िये।

वे विश्वासी जो पापों में लगातार जीते हैं उन्हें ठीक या सही करना सबसे कठिन कार्य है जिसका आप सामना करते हैं। इसे हमें बड़े धीरज और प्रेम से करना चाहिये। आप का मार्ग दर्शन पवित्र आत्मा और धर्मशास्त्र करे। आफ्रीका के एक गांव में एक प्राचीन किसी के घर में गया, उस घर का मेहमानी करने वाला चिल्लाया, "रूको रूको, धीरे से वापस जाओ।" एक काला जहरीला कोबरा सांप उनके बिस्तर पर उन्हें दरवाजा बन्द करते देख रहा था। "मुझे नहीं मालूम कि इसे कैसे बाहर निकालना है" उस मालिक ने कहा "ये मेरी आँखों में जहर फूंकेगा और तब काटेगा" उसके मेहमानी करने वालो ग्रामवासी को मालूम था कि किस प्रकार सांप बाहर निकालना है और फिर घर को सुरक्षित करना है।

पाप आपके झुण्ड में एक जहरीले सांप की तरह है। यदि आप उसे छोड़ दें तो वह हर एक में जहर फैला देगा। आपको जानना चाहिये कि उसे किस प्रकार हटाना है नहीं तो वह आप में ज़हर डाला देगा।

यीशु ने हमें बताया कि झुन्ड में से किस प्रकार पाप को दूर करना है और सामना करने वाले को पुन: वापस लाना है **मत्ती 18:15-18**

मत्ती 18:15 में खोजें कि हमें अपने अपराधी को सही करने के लिये पहले क्या करना है।

- हम किसे सही करें?

[उत्तर: "एक भाई को" हम मसीह में भाइयों को सहीं ठीक करते हैं। एक चरवाहों को मसीह की देह के बाहर कोई अधिकार नहीं है, यदि आपको पक्का नहीं कि कोई विश्वासी है तो कुछ ना करें]

- किस अपराधी से पहले बात करनी चाहिये?

[उत्तर: भाई से "जिसने आपके विरूध्द पाप किया है" जिस विश्वासी के विरूध्द किया गया है उसे समस्या को सुलझाने का प्रयास दूसरे विश्वासी के साथ स्वयं करना चाहिये। विश्वासियों को सिखायें कि उन से बातें करें जिन्होंने अपराध किया है इससे पहले कि दूसरों से समस्या के विषय आप चर्चा करें। चरवाहे को विश्वासियो के बीच बुरे सम्बन्धों को सुधारने में उस समय सहायता करनी चाहिये जब वे अपने आप सही ना कर सकें]

- जिसके विरूध्द अपराध किया गया है वह उपराध के विषय किससे बातें करें?

[उत्तर: "जाकर अकेले में उसे उसकी गलती को बतायें" ये महत्वपूर्ण हैं। अपराध जिसके विरूध्द हुआ वह अपराध करने वाले के पास गुप्त में जाये। ये आमना सामना तो बहुत कठिन है पर ऐसा करने के लिये पवित्र आत्मा हमारी सहायता कर सकती है। आप एक चरवाहा होकर लोगों को अलग गुप्त में उन्हें ठीक करें। किसी और को समस्या ना बतायें, अपनी पठित को भी नहीं।]

- यदि विश्वासी सही कदम की ओर बढ़े तो परिणाम क्या होगा?

[उत्तर: "यदि वह आपकी सुनता है तो आपने अपने भाई को जीत लिया" सावधानी से ठीक किया जाना हमारे भाई के साथ के सम्बन्ध को मज़बूत करता है। हम अपने बच्चों को भी जब उन्हें आवश्यकता होती अनुशासित करते हैं क्योंकि हम उनसे प्रेम करते हैं। हमें उन्हें आश्वासन देना चाहिये कि ये हम इसलिये कर रहें क्योंकि हम उनसे प्रेम करते हैं। इसी प्रकार हमें अपराधी को भी सही करना चाहिये सजा नहीं पर वापस सुधारना चाहिये]

मत्ती 18:16 में दूसरी बात करने को खोजें यदि अपराधी सुधार की ओर नहीं जाता

[उत्तर: हमें अपराधी से दूसरों के सामने बातें करना है जो हमारी वार्ता के गवाह हैं]

मत्ती 18:17 में अन्तिम बात जो करनी है वह देखें यदि अपराधी बदलने से इन्कार करता है

[उत्तर: चरवाहे को झुन्ड के सामने अपराधी को सुधारना चाहिये। यदि वह झुन्ड के साथ चलने से इनकार करता है तब विश्वासियों को उसके साथ संगति नहीं करना चाहिये जब तक वह पश्चताप ना कर के उसके साथ प्रभु भोज न लें। जब वह पश्चत्ताप करता है तो शीघ्र ही उसे पुन: संगति में ले लें जिससे वह दु:ख के साथ निरूत्साह नहीं होगा (2 कुरिन्थि 2:6-7)]

तीतुस 3:10-11 में देखें कि उस व्यक्ति के साथ क्या करें जो विश्वासियों के बीच अलगाव कराता है।

गलतियों 6:1 में खोजें:

- यदि अपराधी हमारे अकेले की नहीं सुनता तो हमें किस प्रकार के लोगों को अपने साथ लेना चाहिये
- जब किसी को सुधारते तो हमारा रवैया कैसा हो।
- जब हम उन्हें ठीक करते तो किन बातों की सावधानी बरतना चाहिये।

प्रेरित 20:28-31 में देखें कि पौलुस प्राचीनों को किस बात की चेतावनी देता है और कि "भेड़िये" क्या करेंगे।

2. सप्ताह के बीच जो गतिविधियां करनी है उसकी योजना अपने सहकर्मियों के साथ बनायें

यदि किसी को दूसरे विश्वासी के विरूध्द शिकायत है तो वह करें जो यीशु चाहता है (भाग 1 ऊपर) "भेड़ियों" से भेंट कर दृढ़ता से व्यवहार करो।

सज्जन आत्मा के लिये प्रार्थना करो और गलती करने वाले विश्वासी से बात करने से पहले साहस करो जैसा गलतियों 6:1 में दिया है।

कोई विश्वासी जो पुन: सुधरना चाहता है उसके साथ और उसके लिये प्रार्थना करो।

3. आने वाली आराधना के समय की योजना सह-कर्मियों के साथ बनाओ।

यहोशू ने किस प्रकार इस्राएलियों को अनुशासित किया सारांश में बताओ या नाटक रूप में बताओ।

बिगड़े विश्वासी को सही करने के कदम वर्णन करें। ऊपर के भाग 1 के प्रश्न पूछें।

मसीह की देह के अनुशासन के अभिप्राय का वर्णन करो:

- यीशु की आज्ञा मानने में अनुशासन लोगों की सहायता करता है, उन्हें मानव नियम मानने हेतु जोर जबरन नहीं करना चाहिये।
- हमें गलती करने वाले की विश्वासियों को पुन: वापस लाना चाहिये उन्हें दण्ड देने के लिये नहीं। यहोशू के समय में इस्राएल "वचन जो मार डालता है" के आधीन थे (2 कुरिन्थि 3:6) पर जबसे यीशु आया हम अनुग्रह के आधीन हैं।

बच्चों को जो उन्होंने नाटक, कविता और प्रश्न तैयार किये हैं प्रस्तुत करने दें।

प्रभु भोज का परचिय देने के लिये 1 कुरिन्थि 11:23-30 पढ़ें। वर्णन करें कि किस प्रकार परमेश्वर ने अनुचित रीति से रोटी तोड़ने पर लोगों को दन्डित किया।

उन्होंने मसीह की देह का सन्ताप नहीं किया। देह का मतलब तीन चीज़ें हैं जिसे परमेश्वर एक मानता है: मसीह की देह जिसने क्रूस पर यातना सही विश्वासियों की देह जो साथ रोटी तोड़ते हैं और उस रोटी के विषय यीशु ने कहा, "ये मेरी देह है"।

दो या तीन लोगों के झुन्ड में मिलें और सप्ताह के विषय पर चर्चा करें और परमेश्वर की सहायता के लिये प्रार्थना करें कि मसीह की देह में पवित्रता और अनुशासन बनाये रखे।

जब एक पाप करने वाले विश्वासी ने यीशु के नियमों का अनुसरण कर सुधरने के लिये पुन: स्थान प्राप्त कर किया और अपने पुन: वापस आने के लिये खुले आम परमेश्वर की स्तुति प्रशंसा करने का इच्छुक है तो उसे ऐसा करने दीजिये।

साथ साथ **गलतियों 6:1 कंठस्त करें।**

Copyright 2004 © by Paul-Timothy. May be freely copied. Download from www.Paul-Timothy.net